शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मेवाड़ की भित्ति चित्रकला : उदयपुर के संदर्भ में

डॉ.लक्ष्मण लाल कुम्हार
सहायक आचार्य (इतिहास)
राजकीय महाविद्यालय, लसाड़िया,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

भित्ति चित्रण की आदिम प्रवृत्ति है। प्रागैतिहासिक गुहाचित्र इसके साक्षी हैं। प्रागैतिहासिक काल की गुहाओं एवं चट्टानों पर चित्रित कलावशेष पर दृष्टिपात करने पर तत्कालीन मानव हृदय की चेष्टाओं, उनकी कला अभिरुचियों एवं मौलिक प्रवृत्तियों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। भारत के प्रागैतिहासिक चित्रों के अवशेष मुख्यतः उत्तरप्रदेश के आजमगढ़, रायगढ़, चक्रधरपुर, होशंगाबाद, मिरजापुर इत्यादि की गुहाओं में उपलब्ध है।[1] इस काल के संस्कृति कला अवशेषों में सरहट, पंचगगढ़ी व बांदा के पाषाण खण्डों पर लाल रंग पोत कर चित्रित कलावशेष उल्लेखनीय हैं। भारत के विभिन्न भागों में उपलब्ध आदिम कलावशेषों के विश्लेषण से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि आज के मानव की भांति ही आदि मानव भी सौन्दर्य एवं कला उपासक था। सौन्दर्य दर्शन की इसी उत्कृष्ट भावनाओं ने ही इस अमूर्तभावों को मूर्तरूप में अंकित करने के लिए प्रेरित किया होगा।[2]

अजन्ता परम्परा का सर्वप्रथम प्रभाव मेवाड़ में परिलक्षित हुआ। गुजरात से भी यहाँ कलाकार आए। यहाँ मौलिक प्राचीन चित्रशैली से मिलकर नवीनता सृजित की। इस शैली के चिह्न मण्डोर द्वार के गोवर्धन धारण, बाड़ोली तथा नागदा मूर्तिकला में देखने को मिलते हैं। इस मौलिक शैली को हम जैन या अपभ्रंश या गुजराती शैली के नाम से जानते हैं। यह शैली अलग-अलग नामों से पुकारी जाती है। गुप्तकालीन सांस्कृतिक अवशेषों में डूँगरपुर के बिछीवाड़ा ग्राम से 10 किमी दूरी पर स्थित आमझरा ग्राम महत्त्वपूर्ण है।[3]

मेवाड़ के प्रमुख भित्ति चित्रावशेष

मेवाड़ में लघु चित्रों के साथ ही भित्ति चित्रों की भी एक अपनी मौलिक परम्परा रही है। इस क्षेत्र में आठवीं सदी में लिखे गये जैन ग्रंथ हरिभद्रसूरी रचित (700-778 ई) समराइच्चिकहा एवं उद्योतनसूरीकृत कुवलयमालाकहा (778 ई) नामक प्राकृत ग्रंथों में कई स्थलों पर भित्ति चित्रों का उल्लेख है। जिससे इस क्षेत्र की प्राचीन गौरवपूर्ण भित्ति चित्रण परम्परा के संदर्भ मिलते हैं। यहाँ इतने लम्बे समय तक चित्रों की कोमल परतें सुरक्षित नहीं रह पाईं और प्रायः सभी चित्र नष्ट हो गये। उल्लेखनीय है कि जालोर में रचित 'कुवलयमालाकहा' में चित्रपट्टों के अत्यन्त सूक्ष्म एवं विस्तृत वर्णन को देखकर यह कहा जा सकता है कि उद्योतनसूरि ने इन्हें यहाँ चित्रित किया हुआ अवश्य देखा होगा। यद्यपि राजमहलों में भी भित्तिचित्र बनाये जाने के वर्णन मिलते हैं किन्तु उस समय पड़ आलेखों को ही प्राथमिकता दी जाती थी। यह परम्परा अविच्छिन्न रूप से पश्चिमी राजस्थान में लोककला के रूप में विद्यमान रही। कुवलयमाला में चित्रकला

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्बन्धी कई तत्कालीन पारिभाषिक शब्द भी मिलते हैं।[4]

दसवीं सदी में ही एकलिंगजी के नाथ-नाथनी मन्दिर में भित्ति-चित्रों के अवशेषों की कल्पना की जा सकती है। महाराणा कुम्भा (1433-1468 ई) के महलों में उसी काल में चित्रावशेषों का उल्लेख है। महाराणा राजसिंह प्रथम (1652-1680 ई) के राज्यकाल में निर्मित एकलिंग मन्दिर में गुसाई जी के सिंहासन के पीछे की दीवारों पर शिव परिवार एवं लक्ष्मी भित्तिचित्रों के स्पष्ट उदाहरण मिलते हैं। इसी काल में निर्मित उदयपुर में अम्बामाता मंदिर, नाथद्वारा, गोगुन्दा एवं उदयपुर सहित कई प्रमुख ठिकानों एवं समृद्ध घरानों में हजारों के रूप में भित्तिचित्रों का मिलना इस प्रदेश के जनसाधारण की कलात्मक अभिरुचि का परिचायक है।[5]

मेवाड में विभिन्न स्थानों में चित्र निर्माण की अपनी-अपनी निजी चित्रण परम्पराएँ रही है। आहाड़, चित्तौड़, चावण्ड एवं उदयपुर में मेवाड़ नरेशों ने चित्रकारों को राज्याश्रय दिया तथा देलवाड़ा जैन एवं नाथद्वारा एवं वल्लभ सम्प्रदाय के धार्मिक केन्द्र रहे हैं, जहाँ चित्रकला को पूर्ण प्रश्रय मिला। देवगढ़, प्रतापगढ़, शाहपुरा, बस्सी, बेगू, केलवा आदि ठिकानों में भी स्थानीय चित्रण पद्धतियों के अनुकूल चित्रकारों ने कार्य किया। फलस्वरूप इस भू-खण्ड में बारहवीं सदी से अब तक विभिन्न कला केन्द्रों की पृष्ठ भूमि बन जाती है।[6]

चित्तौड़गढ़ से प्राप्त 1229 ई. के शिलोत्कीर्ण रेखांकन पश्चात् कुम्भा के महलों तथा भामाशाह हवेली सहित महाराणा कुम्भा एवं उदयसिंह के काल में उत्कृष्ट भित्ति चित्रों के निर्माण की पुष्टि होती है। इन चित्रों के पहनाव में कुलहदार पगड़ी एवं चाकदार जामा है। गेरूए रंग से निर्मित दीवारों पर बने चित्र चित्तौड़गढ़ के महलों से प्राप्त हुए जिनके वर्ण्य विषय प्रमुखतः फूल, पत्तियाँ व ज्यॉमितिक हैं। 16वीं शताब्दी ई. में मेवाड़ चितेरों ने भित्ति-चित्रों के रूप में भागवत पुराण एवं चौर पंचाशिका आदि अनेक कलाकृतियाँ सृजित की। 1615 ई. में मुगल-मेवाड़ संधि हो जाने के बाद कई चितेरों ने मेवाड़ में रागमाला, रसिकप्रिया, बिहारी-सतसई, गीत गोविन्द, भागवत, रामायण आदि को चित्रित किया और मंदिरों, महलों, हवेलियों एवं छतरियों में भित्ति चित्र बनवाये गये।[7]

इस क्षेत्र के विभिन्न राजप्रसादों, हवेलियोंए मन्दिरों एवं श्रेष्ठीजनों के निवास स्थानों में जो भित्ति चित्रावशेष देखने में आये हैं, उनका संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है :

सर्वऋतु विलास के भित्ति चित्र महाराणा राजसिंह (प्रथम) के कुंवरपदे काल में निर्मित विसं. 1707 (1650 ई) में राजकुमार के महलों में चित्र निर्मित होने का संदर्भ मिलता है। यहीं उनके पुत्र सरदारसिंह का भी निवास स्थान था। उन्होंने पारिवारिक कारणों से आत्महत्या कर ली और उनकी पत्नी रतलाम में ही सती हो गई, फलस्वरूप इन महलों में 'सगसजी का थाना स्थापित हुआ। चित्रांकन से भवन को सजाया गया, इनमें तत्कालीन भागवत पुराण के गजेन्द्र मोक्ष (1655 ई) जैसी ही देव कन्याओं का चित्रण मिला है। पंखों से उड़ती हुई इन नारी आकृत्यिों की भाव भंगिमाएँ करुणा से ओतप्रोत है। इनके पहनावे में लहंगे की आड़ी धारियों के रेखांकन हैं तथा हाथों में दीपक के साथ ही अफीम के फूलों का डोडा (पोस्तफूल) है। राजस्थान में इन्द्रगढ़ के किले कोटाए मगदन शाह की छत्री, आमेर तथा सूर्य मन्दिर सतवास (भरतपुर) आदि स्थानों में

ऐसे ही चित्र मिले है। इन चित्रों में परशियन प्रभायुक्त बेल-बूटों के अलंकरण है। नागौर के भित्ति चित्रों पर भी ठीक यही प्रभाव है। सम्भवतः वे चित्रकार यहाँ से प्रभावित रहे हों। चित्रण में मुख्य रूप से लालए बेंगनी, हरे व पीले, खनिज रंगों का प्रयोग है जो तत्कालीन लाक्षा रस पद्धति से बने थे। उन पर पानी व जलवायु का प्रभाव नहीं पड़ा पर अब ये फोटो पश्चात् रंग की परतों में दब चुके हैं[8]

कर्ण विलास के भित्ति चित्र - उदयपुर राजप्रसादों में राजकीय संग्रहालय के नीचे राज्य पुराभिलेख विभाग के भण्डारगृह में महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय एवं जगतसिंह (द्वितीय) कालीन फ्रेस्को-बानों एवं फ्रेस्को सैको पद्धति में निर्मित भित्ति-चित्र मिले हैं। प्रथम, गुटाई के इजारों में हाथियों तथा मानवकृतियों का स्पष्ट अंकन है। इनमें पगड़ी विशेष प्रकार की है। यही पर फ्रेस्को सैको पद्धति में सूखी दीवार पर अंकित दो वृहद भित्ति चित्र हैं। ये व्यक्तिचित्र महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय एवं जगतसिंह (द्वितीय) के लगभग 1750 ई में चित्रित हुए हैं और तहखाने के चौथे कमरे में आकर्षण का केन्द्र है।[9]

जनाना ड्योडी के भित्ति चित्र - महाराणा के निजी प्रासादों में अब तक जन सामान्य का पहुँचना वर्जित था किन्तु वर्तमान महाराणा भगवतसिंह ने इन प्रासादों को दर्शनीय स्थल बनाकर कला व संस्कृति के अध्ययन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। अतः प्राचीन महलों के दक्षिण पश्चिमी गुम्बल के नीचे की मंजिल में कृष्ण लीलाओं, नर्तकियों एवं घुड़सवारों के कई भित्तिचित्रावशेष मिले हैं। ये चित्र 1650 ई.-1700 ई. के मध्य चित्रित तत्कालीन कला की महत्त्वपूर्ण सामग्री है। इनके ठीक सामने पूजा स्थल में गणेश व रिद्धी-सिद्धी के भित्ति चित्र अंकित हैं जो परम्परागत पूजन के चित्रण अभिप्रायों में महत्त्वपूर्ण हैं।[10]

कृष्ण विलास के भित्ति चित्र - राज प्रासादों में सबसे ऊपर की मंजिल में कृष्णा निवास नाम से प्रसिद्ध है, यहाँ 1830 ई. में चित्रित गोटाई फ्रेस्कों के अतिरिक्त फेस्कों-सेको में लघु चित्र पद्धति के भित्ति चित्र मिले हैं। इन भित्ति चित्रों का चित्रण महाराणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णा कुमारी के स्वर्ग सिधारने की स्मृति में कराया गया। इस निवास में पश्चिमी दीवार के चित्रों में सवारियां, शिकार, धार्मिक पर्व आदि की अच्छी सामग्री चित्रित है। तत्कालीन सामाजिक दशाओं का पूर्वी दीवार पर अच्छा चित्रण है तथा तत्कालीन सामाजिक रीति.रिवाजों पर कई चित्र टेम्परा पद्धति में ही अन्य दीवारों पर भी चित्रित है। चित्रों में तत्कालीन लघु चित्र शैली का दीवार पर ज्यों का त्यों अंकन मिलता है। मेवाड़ का यह स्थल उत्कृष्ट भित्ति चित्रों से सुसज्जित है।[11]

अम्बामाता मन्दिर के भित्ति-चित्र - उदयपुर के पश्चिमी क्षेत्र में अम्बामाता मन्दिर है, जिसका निर्माण स्थानीय शिलालेख के अनुसार महाराणा राजसिंह (प्रथम) के राज्यकाल 1664 ई. से सूत्रधार सुरजानहट व सूत्रधार मेषवजी ने किया तथा राजसिंह द्वितीय (1754 ई. से 1761 ई.) के राज्यकाल में इसे चित्रण से सुसज्जित कराया गया। इस काल के गोटाई में निर्मित धार्मिक भित्ति चित्र मन्दिर के इजारों में विशेष उल्लेखनीय है। यहाँ पर गोटाई फ्रेस्कों में भवानी का दरबार में चित्रित हैं। चित्र में गणेश एवं भगवान शंकर की ताण्डव मुद्रायें कला की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।[12]

जगमन्दिर के भित्ति चित्र - पिछोला झील के मध्य महाराणा जगतसिंह प्रथम ने जगमन्दिर राज प्रासाद बनवाये। महाराणा संग्रामसिंह

(1710-1734 ई) ने यही एक बुर्ज में कुछ चित्र अंकित करवाये थे जिनमें मानवाकृति व पशु.पक्षियों को अलंकारिक ढंग से संयोजित किया गया है। देवगढ़ के कपड़ द्वारा बुर्ज अजारा की ओंवरी व मोती महल में भी इसी काल के चित्र बने प्राप्त हुए हैं।[13]

बापना हवेली के भित्तिचित्र - जड़ियों की होल उदयपुर में स्थित जैसलमेर के सेठ जोरवरमल बापना को महाराणा भीमसिंह ने 1818 ई. (वि. सं. 1875) में उदयपुर में नगर सेठ के रूप में सम्मान दिया। उनका निवास मेवाड़ में नगर सेठ की हवेली नाम से प्रसिद्ध है। इस हवेली की तीनों मंजिलों में अलग-अलग समय के चित्र हैं। पहली मंजिल के गोखड़े में युद्ध, पृथ्वीराज एवं चन्द वरदाई, ढोला मारू, लैला मजनूं, माधवानल, कामकन्दला तथा हाथियों के विभिन्न स्वरूप शैलीगत विशेषताओं के साथ चित्रित है। ऊपर की दूसरी मंजिल में भी इसी प्रकार के चित्र हैं, जिनमें नायक-नायिकाएँ पतंग प्रिया, आलस्य कन्या की अंगड़ाई, राजा रानी, कांटों लागों रे देवरिया, बाप्पा रावल एवं रनवास के चित्र हैं। इनमें छतों पर रति चित्रों का बहुत ही आकर्षक चित्रण है। हवेली के सभी निवास स्थलों में हाथियें के परिवार चित्रित है। इन चित्रों का मेवाड़ के भित्ति चित्रों में विशेष स्थान है। ऊपर की मंजिल में खुली छत के चित्रों में कुशल अंकन पद्धति का प्रदर्शन हैए जिसमें किशनगढ़ व बून्दी के चित्रकारों की कला का आदान-प्रदान दिखाई देता है।[14]

बड़ा रामद्वारा - पिछोला झील उदयपुर के पश्चिमी तट पर ब्रह्मपुरी में स्थित इस मन्दिर में गीली गोटाई के भित्ति चित्र बने हैं, ये भित्ति चित्र लाल गेरुए रंग के प्रयोग की प्राचीन परम्परा दर्शाते हैं। ये मन्दिर में धार्मिकता एवं सात्विकता का बोध कराते हैं। यही रंग योजना इस मन्दिर के पुस्तक भण्डार एवं शयन कक्ष में निर्मित विभिन्न साधुओं के चित्रों में हैं, जो यहाँ प्राचीन काल से निरन्तर चलती रही है। यहाँ 1848 ई. में निर्मित ध्यानीराम महाराज की छतरी के भित्ति चित्र तत्कालीन कला की एक अनोखी परम्परा दर्शाते हैं।[15]

श्री नाथूलालजी जड़िया की बैठक के भित्ति चित्र - कसारो की होल उदयपुर में यह प्राचीन परम्परागत चित्रण विषयों का एक अनोखा स्थल है। इन भित्ति चित्रों में लैला मजनूंए सूर्पणखा, विभिन्न प्रकार के जानवर तथा कमरे में ठीक सामने के दालान में एक रतिक्रिया का वृहद शृंगारिक चित्र दीवार पर अंकित हैं, जो भित्ति चित्रों में अनोखा भाव दर्शाता है। यह किस दृष्टि से अंकित हुआ समझना दुर्लभ है। चित्रण में देवगढ़ के चित्रकारों का प्रभाव स्पष्ट होता है, ये चित्र सम्भवतः महाराणा भीमसिंह के राज्यकाल में चित्रित हुए हैं।[16]

धाबाईजी की हवेली - घाणेराव की घाटी उदयपुर स्थित इस हवेली में शीश महल कक्ष एक दर्शनीय स्थल है, यहाँ पर प्राप्त बगीचे में विचरण करते नायक-नायिकाओं तथा चित्रलेखा के भित्ति चित्र विशेष उल्लेखनीय है। साथ ही कई धार्मिक भित्ति चित्रों का अंकन मिलता है, जो आला गीला चित्रण पद्धति के प्राचीन उत्कृष्ट उदाहरण है।[17]

कोठारीजी की हवेली - घन्टाघर के समीप उदयपुर में स्थित कोठारीजी की हवेली में भी भित्ति चित्रों का अच्छा चित्रण हुआ है यहाँ चित्रित विभिन्न प्रकार के विषय वस्तु पर भित्ति चित्रों का निर्माण हुआ उनमें ढोला मारू एवं राज दरबार की सवारी आदि के चित्र विशेष कलात्मक है।[18]

पिपलियाँ हवेली के भित्ति चित्र - उदयपुर के पश्चिमी भाग में नागानगरी ब्रह्मपुरी पिछोला के किनारे पर स्थित इस हवेली के रंग निवास जो तीसरी मंजिल के कक्ष में है, में बहुत आकर्षक कलाकृतियाँ यहाँ पर सुरक्षित हैं। ये 1800 ई. में बने टेम्परा पद्धति के भित्ति चित्र हैं। यह महाराणा भीमसिंहकालीन राजप्रासादों में कृष्ण निवास के भित्ति चित्रों के समरूप सम्भवतः उसी काल का चित्रण है। यहाँ छत के मध्य वृत्त में रास लीला का बारीकी से अंकन हुआ है जो मेवाड़ के चित्रकारों की उत्कृष्ट कार्य कुशलता का परिचय देता है। इसके समीप पुरोहितजी की हवेली में युद्ध एवं शृंगार के चित्र भी इजारों में मिलते हैं। इस हवेली में माधवानलकामकन्दला का बहुत ही कलात्मक चित्रण मिलता है।[19]

दौलतरामजी की हवेली - खोड़ीआमली ब्रह्मपुरी, उदयपुर में स्थित इस हवेली में 1850-52 ई. (विक्रम संवत् 1908-1909) में लाख के रंगों से निर्मित भित्तिचित्रों की परम्परा यहाँ के रंग भवन में देखने को मिलती है। चित्रों में चित्रकार ने रंग संयोजन में विशेष दक्षता दिखाई है, प्रमुख चित्रों में शिव परिवार, बीजल और राणकदे, उषा और अनिरूद्ध, कृष्ण व गोपियों की होली के साथ ही शृंगार एवं वीर रस में मत्रिका, सुकप्रिया एवं बेलबूटों के उत्कृष्ट विषय वस्तु पर चित्रण हुआ है।[20]

करजाली की हवेली - मोती चौहट्टा उदयपुर से स्थित इस हवेली में प्राप्त विभिन्न पद्धतियों के भित्ति चित्रावशेषों में लाक्षारस के उत्कृष्ट चित्र देखने को मिलते हैं। यहाँ के चित्रों में हाथियों का परिवार, मेढ़ों की लड़ाई, शिकार की बड़े पैनल, हवेली का दृश्य चित्र, स्वर्ग की झांकी, बादलों की कड़-कड़ाती बिजली में सूर्य का रथ, राम पंचायत, राज्याभिषेक, शिव विवाह, चन्द्रमा के हिरन की गाड़ी, इन्द्र तथा एरावत हाथी आदि उल्लेखनीय भित्ति चित्र हैं। ये चित्र 1800 ई. के लगभग निर्मित हुए तथा मेवाड़ की तत्कालीन सांस्कृतिक एवं कलापरम्परा में विषय वस्तु के महत्त्व को स्पष्ट करते हैं।[21]

बारहठ हवेली के भित्तिचित्र - भटियानी चोहट्टा, उदयपुर में स्थित इस हवेली में 1850 ई. के लगभग महाराणा स्वरूपसिंह के राज्य काल में निर्मित चित्र है। दरवाजे के ऊपर स्थित दरीखाने में गोटाई के इजारों के भित्ति चित्र आकर्षण का केन्द्र हैं, जिनमें सूअर का शिकार, पागल हाथी, झूलती हुई नायिकाएँ तथा रनिवास में नृत्य आदि के प्रभावपूर्ण चित्र हमेरजी गजधर के तत्वावधान में निर्मित हुए ये भित्ति चित्र लाल (हिंगलू पृष्ठभूमि पर नीले व पीले रंगों का प्रयोग सहित काली-स्याही में गतिपूर्ण रेखाओं का चित्रण) आलागीला पद्धति के उत्कृष्ट उदाहरण है।[22]

पानेरी भवन के भित्ति चित्र - जगदीश मन्दिर के निकट उदयपुर में स्थित देवकिशन पानेरी के शृंगार कक्ष में गोपाल कृष्ण की मुद्राएँए युद्ध का दृश्य, नाव की सवारी आदि महत्त्वपूर्ण भित्ति चित्र निर्मित है। इन्हीं चित्रों में कई युगल प्रेमियों एवं रतिचित्रों का अंकन भी दर्शनीय है। सभी इजारों में गोटाई की पद्धति में अंकित आकर्षक चित्र है।[23]

गणेशलालजी के रंग भवन चित्र - गणगौर घाट के निकट उदयपुर में स्थित भट्टजी गणेश लालजी के रंग-भवन में सम्वत् 1903 (1845 ई.) के लगभग बने लाक्षा रस चित्रों का अच्छा चित्रण हुआ है जिनमें माधवानल कामकन्दला, कन्दुक-प्रिया, शृंगार एवं फुन्दी के गति पूर्ण रेखाओं में चित्रित चित्र उदयपुर के भित्ति चित्रों में अपना प्रमुख स्थान रखते हैं। इसके समीप ही

गोपाल पानेरी के भवन में गोटाई व लाक्षारस के उत्कृष्ट भित्ति चित्रों का निर्माण हुआ है।[24]

एकलिंग मन्दिर के भित्ति चित्र - मन्दिर में स्थित गुसाईजी की गद्दी के पीछे पश्चिमी दीवार पर उपलब्ध शिव परिवार तथा हाथियों के मध्य लक्ष्मी का भित्ति चित्र उल्लेखनीय है। ये चित्र प्रारम्भ में गुटाई चित्रण पद्धति से बने, किन्तु विभिन्न राज्यकाल में साज-सज्जा के समय चित्रकार इन्हें छुए बिना नहीं रहे। अतः इन चित्रों पर पुनः कार्य हुआ ज्ञात होता है। ये भित्ति चित्र महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय एवं जगतसिंह द्वितीय के राज्य काल 1710-1751 ई. के लगभग चित्रित हुए अनुमानित होते हैं। इनमें चित्रकार जगन्नाथ की चित्रण पद्धति का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इनके अतिरिक्त गुसाईजी के निवास में कई भित्ति चित्र है। यहीं पर लकुलीश मन्दिर के शिलालेख 971 ई. के समकालीन सरस्वती के उच्चित्र को पाकर उस काल की उन्नत कला परम्परा का अनुमान हो जाता है।[25]

भित्ति-चित्र हमारी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है जो सामाजिक राजनीतिक तथा सांस्कृतिक थाती की ऐतिहासिक गाथा अपने आप में समेटे हुए है। मेवाड़ का कलात्मक वैभव संरक्षण चाहता है। यदि इसे बचाने का प्रयास नहीं किया गया तो इस कला के केवल स्मृतियाँ ही शेष रहा जाएगी।

संदर्भ ग्रन्थ

1 वाचस्पति गैरोला, भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ 71

2 वही, पृष्ठ 72

3 लक्ष्मणलाल कुम्हार, मेवाड़ की प्रमुख हस्तकलाएँ (अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध) एमफिल, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर 2010, पृष्ठ 37

4 देव कोठारी (सं शोध पत्रिकाए वर्ष 43, अंक 3, 4, जुलाई-दिसम्बर, 1992, पृष्ठ 74 य आर. के. वशिष्ठ, मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा, 8-9, 44

5 शोध पत्रिकाए वर्ष 24, अंक 3-4, जुलाई-दिसम्बर, 1974, पृष्ठ 78

6 आर. के. वशिष्ठ, मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा, पृष्ठ 37

7 संदर्भिका राजस्थान सुजस पृष्ठ 940

8 आर. के. वशिष्ठ, मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा, पृष्ठ 44-45

9 संदर्भिका राजस्थान सुजस पृष्ठ 940

10 वही, पृष्ठ 946

11 आर. के. वशिष्ठ, मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा, पृष्ठ 45

12 वही, पृष्ठ 45 य कविराजा श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 2, पृष्ठ 634, इस मंदिर के निर्माण के संदर्भ में उल्लेख प्राप्त होता है।

13 संदर्भिका राजस्थान सुजस पृष्ठ 946 य श्रीधर अंधारे, देवगढ़ पेटिंग पोर्टफोलियो, पृष्ठ 2

14 आर. के. वशिष्ठ, मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा, पृष्ठ 46

15 वही, पृष्ठ 46 य संदर्भिका राजस्थान सुजस पृष्ठ 947

16 वही, पृष्ठ 46 य वही, पृष्ठ 947

17 आर. के. वशिष्ठ, मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा, पृष्ठ 46

18 वही, पृष्ठ 46-47, संदर्भिका राजस्थान सुजस पृष्ठ 947

19 संदर्भिका राजस्थान सुजस पृष्ठ 947

20 संदर्भिका राजस्थान सुजस पृष्ठ 947

21 वही, पृष्ठ 947

22 वही, पृष्ठ 946

23 आर. के. वशिष्ठ, मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा, पृष्ठ 47

24 भंवर शर्मा, आकृति (रा.ल.क.अ. पत्रिका), जुलाई 1973, पृष्ठ 9

25 आर. के. वशिष्ठ, मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा,
पृष्ठ 47-48